ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

[kyk e f'k{k.k d lkFk if'k{k.k dk egRo

डा0 शैलजा शुक्ला
सहायक प्रोफेसर (शा0शि0)
डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर

व्यक्ति को अपने जीवन में पग–पग पर शिक्षण और प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है। प्रशिक्षण ही वह चाक है, जिस पर कुशल कुम्हार के हाथों मिट्टी का साधारण सा लोंदा खूबसूरत कुल्हड़, घड़ा या जगत को प्रकाश देने वाला दीपक बन जाता है। यें तो कुछ प्रतिभाएं जन्मजात होती है, पर प्रशिक्षण पाकर ही वे अपनी अधिकतम क्षमता का प्रदर्शन कर पाती है।

प्राचीनकाल से शिक्षण के लिए सभी सभ्य समाजों में गुरू के पास जाने की प्रथा रही है। भारत में इसे ही गुरूकुल प्रणाली कहा गया है। यों तो व्यक्ति जीवन भर कुछ न कुछ सीखता है, पर जीवन के पहले 25 वर्ष को ब्रह्मचर्य आश्रम का नाम देकर उसे पूरी तरह शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए ही समर्पित किया गया हैं भगवान राम से लेकर कृष्ण तक और दयानंद से लेकर विवेकानन्द तक सभी अवतारों और महापुरूषों ने गुरू के चरणों में बैठकर जो सीखा, वह आज भारत की ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की अमूल्य धरोहर है।

यदि वर्तमान समय में प्रशिक्षण के चमत्कार की चर्चा करनी हो तो प्रख्यात निशानेबाज जसपाल राणा का उदाहरण सर्वश्रेष्ठ है। उसने पिता नारायण सिंह एक श्रेष्ठ निशानेबाज है। इन दिनों वे उत्तराखण्ड की राजनीति में सक्रिय हैं पर 80 के दशक में वे प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के सुरक्षाकर्मियों को निशानेबाजी का प्रशिक्षण देते थे। एक बार राजीव गांधी ने उनसे कहा कि वे उनके पुत्र राहुल को भी निशानेबाजी सिखा दें। नारायण सिंह राहुल के साथ ही हम उम्र अपने पुत्र जसपाल को भी निशानेबाजी सिखाने लगे, जसपाल ने गति पकड़ ली। आज जसपाल राणा अंतर्राष्ट्रीय स्तर का निशानेबाज है। इसके बाद नारायण सिंह ने अपने दूसरे पुत्र सुभाष और बेटी सुषमा को निशानेबाजी सिखायी। अब वे दोनों भी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं।

केवल बच्चों को ही नहीं नारायण सिंह ने अपनी पत्नी व पुत्रवधु को भी प्रशिक्षण दिया। आज सास–बहु दोनों राष्ट्रीय स्तर की निशानेबाज हैं। स्पष्ट है कि जीवन में प्रशिक्षण तथा अच्छे प्रशिक्षक का बहुत महत्व है।

पश्चिमी उ0प्र0 बागपत जिले के ग्राम जोहडी के डा0 राजपाल सिंह स्वयं विख्यात अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाज रहे हैं। उन्होंने 1998 में जोहडी स्कूल ऑफ शूटिंग स्थापित कर फायरिंग रेंज बनायी तथा बच्चों को प्रशिक्षण देना शुरू किया। आज वहाँ लड़के और लड़कियाँ ही नहीं तो 45–50 वर्ष की महिलाएं भी अपनी ग्रामीण वेशभूषा में राष्ट्रीय स्तर की निशानेबाजी की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पदक जीत रही हैं। इसी प्रकार पूर्वी उ0प्र0 का एक गांव हाकी गांव के नाम से प्रसिद्ध है। वहां के निवासी एक पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी ने अपने गांव में स्वयं ही अच्छा प्रशिक्षण देकर नये खिलाड़ियों की फौज तैयार कर दी है। वहां के खिलाड़ी अब प्रादेशिक और राष्ट्रीय टीम में स्थान बनाने लगे हैं।

ग्राम संसारपुर (जालंधर, पंजाब) को हाकी का स्वर्ग माना जाता हैं वर्ष 1932 से 1980 के बीच यहां से 14 अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी निकले। 2006 में दोहा एशियाड में भारत की महिला हाकी टीम ने कांस्य पदक जीता। इसमें छह लड़कियाँ एक ही गांव शाहबाद मरकंडा (अंबाला, हरियाणा) की थी। इन्हें प्रशिक्षक बलदेव सिंह ने शिक्षित किया। ये सभी यहीं के गुरू नानक प्रीतम सीनियर सेकेन्डरी स्कूल की छात्राएं थीं। बलदेव सिंह ने 10 से कम उम्र की 20 लड़कियों को छांटकर प्रशिक्षण दिया। उसमें से निकली इन लड़कियों को 'सुपर सिक्स' कहा जाता है।

बलजिंदर कालिज, फरीदकोट के चपरासी नत्थूराम सैनी ने अपनी चारों लड़कियों को खेल का प्रशिक्षण दिया। वे सब अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी बनीं। इसमें से बड़ी प्रेमा सैनी ने 1967–72 में महिला हाकी में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1970–71 में वह कप्तान बनी। केन्द्र ने उसे अर्जुन पुरस्कार तथा पंजाब शासन ने महाराजा रणजीत सिंह पुरस्कार से सम्मानित किया। इन दिनों वह राजकीय विद्यालय, मोहाली में कार्यरत हैं। दूसरी बेटी कृष्णा

सैनी छह साल तक भारत की सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट रही। अनेक बार 800 मीटर एवं बाधा दौड़ में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इन दिनों वह भी शासकीय विद्यालय में कार्यरत है। तीसरी बेटी स्वर्ण सैनी 1971 से 75 तक भारतीय महिला हाकी टीम में रही। वह जी0एच0जी0 कालिज में अध्यापक है। चौथी रूपा सैनी भी 1970 से 81 तक हाकी टीम में रही है। उसने तीन विश्वकप, दो वि व चैम्पियनशिप और मास्को ओलम्पिक में भाग लिया। तीन साल तक वह टीम की कप्तान भी रही। वह 15 वर्ष की अवस्था में ही हाकी टीम में शामिल हो गयी थी। तथा 20वें साल में उसे अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पंजाब शासन ने किला रायपुर, लुधियाना में हुए 2007 के ग्रामीण खेलों (जो मिनी ओलम्कि कहे जाते हैं) को नत्थूराम को समर्पित किया। 2005 में नत्थूराम को यहाँ सम्मानित किया गया था। अब वह दिवंगत हो चुके हैं।

स्पष्ट है कि खेल हो या कोई अन्य कला, प्रशिक्षण से उसमें निखार आता है। विद्यार्थियों के अवकाश के दिनों के समय का सदुपयोग शिक्षा से इतर अपनी रूचि के किसी अन्य काम में किया जाये, तो वह सारे जीवन के लिए एक धरोहर बन जाएगी। आगे चलकर इससे पैसा और प्रसिद्धि भी मिल सकती है। यदि यह न भी मिले, तो जीवन में एक उपलब्धि तो होगी ही, जिसके बल पर हम स्वयं को दूसरों से एक कदम आगे खड़ा अवश्य अनुभव करेंगें।